समकालीन विमर्श

मुद्दे और बहस

(स्त्री, दलित एवं आदिवासी के संदर्भ में)

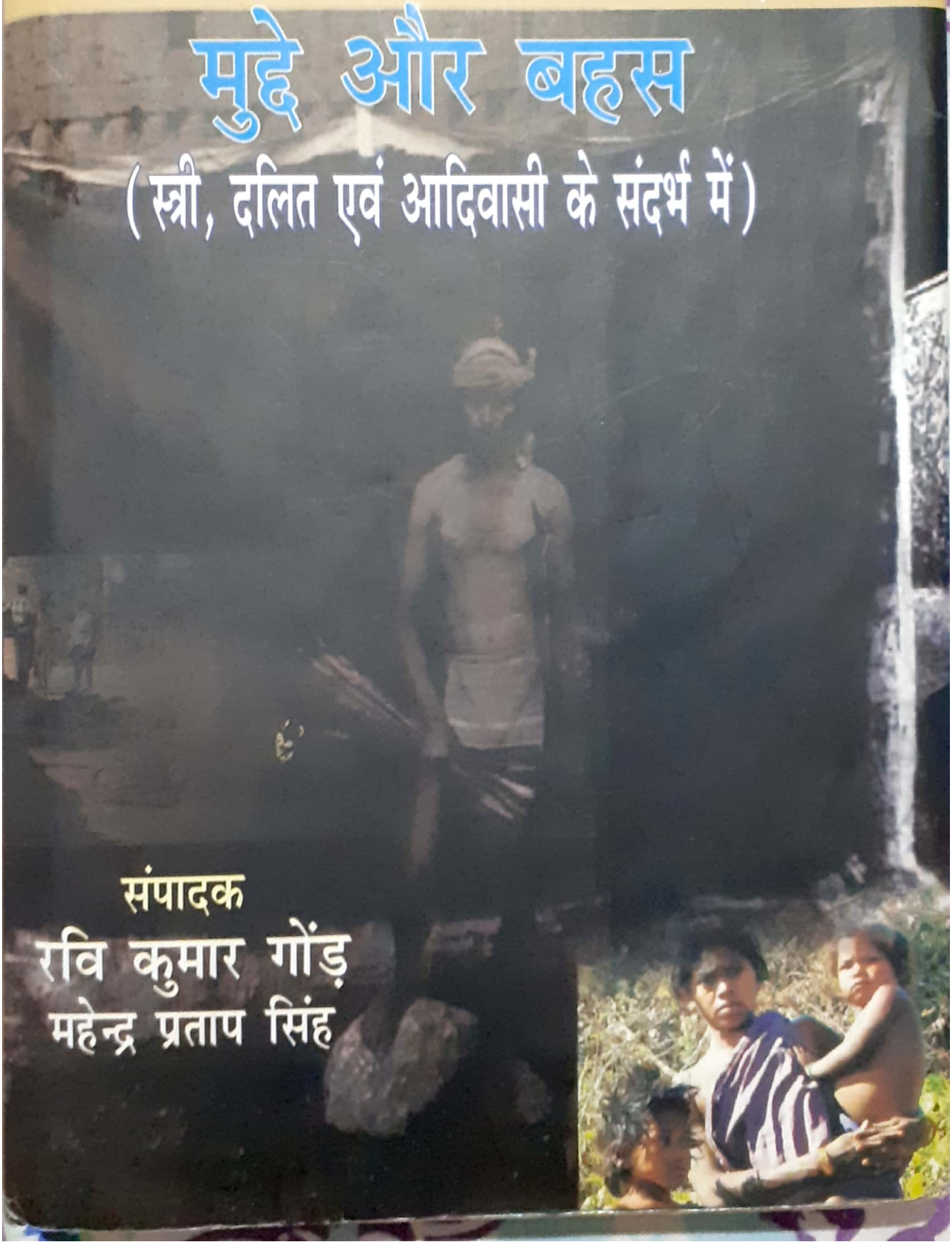

संपादक
रवि कुमार गोंड़
महेन्द्र प्रताप सिंह

Scanned by CamScanner

स्तुत पुस्तक के सम्पादकों ने बहुत अच्छी उद्भावना और परिकल्पना की है था इन विमर्शों पर सापेक्ष-निरपेक्ष रूप में खुली बहस के लिए अवसर दिया । अपने-अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ, विद्वानों, विचारकों, चिन्तकों और लेखकों ने ी, दलित और आदिवासी विमर्शों पर गंभीर एवं तथ्यात्मक अनुशीलन किया । इन विमर्शों से जुड़े हुए अनेक मुद्दे उठाये गए हैं और उनके हर पहलू की ड़ताल की गई है और महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं। इन विमर्शों से म्बंधित बहस बहुत जीवन्त और संजीदगी भरी है। सबसे अच्छी बात यह है क बहस को तटस्थ और निष्पक्ष रखने की कोशिश की गई है।

रवि कुमार गोंड़

जन्म तिथि : 03-11-1986

पिता का नाम : श्री अमरनाथ गोंड़, माता का नाम- श्रीमती चित्रारेखा

शैक्षिक योग्यता : एम. ए., एम. फिल., नेट (हिन्दी) लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ।

प्रकाशित कृति : महेंद्र प्रताप सिंह की साहित्य-साधना।

सम्पादन : 1. कविवर जमालुद्दीन सफर का काव्य-सफर।

2. वर्तमान समय में आदिवासी समाज।

सम्मान : विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ उज्जैन द्वारा साहित्य शिरोमणि उपाधि।

सरिता लोक-सेवा संस्थान सुल्तानपुर उ.प्र. द्वारा कवि शिरोमणि उपाधि

सात पुस्तकें प्रकाशकाधीन

अन्य उपलब्धियाँ : राष्ट्रीय संगोष्ठी में लगभग 12 शोध-पत्र प्रस्तुत, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में शोध पत्र प्रस्तुत एवं सहभागिता, स्वतंत्र भारत समाचार पत्र में लेख एवं पुस्तक समीक्षा प्रकाशित, वाग्प्रवाह शोध अर्द्धवार्षिकी पत्रिका का आजीवन सदस्य, क्षितिज वार्षिक पत्रिका (महाविद्यालय पत्रिका) में लेखों का प्रकाशन, दो वर्कशापों का अनुभव, गीतांजलि फाउण्डेसन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में काव्य पाठ, गीतांजलि फाउण्डेसन में पुरस्कार चयन समिति में मुख्य चयनकर्ता, विश्व विधायक समाचार-पत्र में काव्य लेख एवं पुस्तक समीक्षा प्रकाशित, अन्य पत्र-पत्रिकाओं में लेखों का प्रकाशन।

संप्रति : पी. एच. डी.(शोधरत) केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश

स्थाई पता : ग्राम व पोस्ट-उमरी जलाल, थाना- जहाँगीरगंज, जिला-अम्बेडकर, नगर, पिन न. 224147 मो. नं.-09336283174 ई-मेल : ravigoan86@gmail.com

अनंग प्रकाशन

बी-107/1, गली मंदिर वाली,

समीप रबड़ फैक्ट्री उत्तरी घोण्डा, दिल्ली-110053

e-mail : anangprakashan@mail.com

web. www.anangprakashan.com

फोन नं. 09350563707, 09540176542

ISBN 978-93-80845-26-5

9 782894 661215

Scanned by CamScanner

खण्ड–दो

दलित विमर्श : वैचारिक दृष्टि

ओमप्रकाश वाल्मीकि : व्यापक सामाजिकता के पक्षधर 218-223
– बली सिंह

समकालीन हिन्दी कविता और दलित चेतना 224-236
–जयप्रकाश कर्दम

समकालीन साहित्य का स्याह यथार्थ 237-242
– डॉ. मनजीत सिंह

दलित आत्मकथा 'मेरा बचपन मेरे कधों पर'
दलित दुर्दशा का दस्तावेज 243-259
– अनिल कुमार

दलित-सशक्तीकरण में दलित-विमर्श की भूमिका 260-267
– डॉ. कृष्ण कुमार अग्रवाल

दास्तान-ए-दलित 268-275
– डॉ. आर.एस. यादव

हिन्दी दलित नाटकों की उपेक्षा की खोजबीन 276-282
– सर्वेश कुमार मौर्य

दलित कहानियों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ 283-291
– डॉ. मनु प्रताप सिंह

दलित दृष्टि 292-296
– विक्रम कुमार पासवान

मिथिला चित्रकला में दलित कलाकारों की भूमिका 297-301
– डॉ. शिवकुमार पासवान

उन्नीस सौ चौरासी कहानी संग्रह में व्यक्त दलित समाज 302-306
– मनोरमा गौतम

दलित साहित्य लेखन और यथार्थवाद 307--312
– अंजू लता

Scanned by CamScanner

दलित साहित्य लेखन और यथार्थवाद

अंजुलता

वर्तमान उत्तर पूँजीवादी युग में इतिहास की प्रासंगिकता बढ़ती जा रही है। जबकि बौद्धिकों का एक खेमा लगातार इतिहास के अंत की घोषणा करता जा रहा है फिर भी समाज के लिए इतिहास की आवश्यकता आज भी बनी हुई है। वास्तविकता यह है कि मनुष्य इतिहास के बिना जिन्दा ही नहीं रह सकता है। वह समाज से स्वयं को तभी जुड़ा हुआ महसूस कर सकता है जब इतिहास के साथ उसे अपनापन महसूस हो। इतिहास ना सिर्फ अतीत के साथ हमारी निजता की पहचान कराता है बल्कि बेहतर भविष्य के निर्माण में सहायता भी करता है।

विडम्बना यह है कि आज भी हमारे को बेहतर तरीके से इतिहास में दर्ज नहीं किया गया है एक लम्बे समय से स्त्री, दलित और आदिवासी इतिहास से गायब रहे हैं। उनकी भाषा, सभ्यता और संस्कृति को इतिहास से अलग रखा गया है। पिछले 15 वर्षों में इस क्षेत्र में काफी काम हो रहा है जो बहुत ही आवश्यक था। इस क्रम में दलित साहित्य लेखन, स्त्री लेखन और आदिवासी साहित्य प्रकाश में आया। इस संदर्भ में अपनी पुस्तक इतिहास के बारे में लाल बहादुर वर्मा जी कहते हैं कि– "बच्चे तो इतिहास का हिस्सा होते ही नहीं हैं उनमें बचपना जो होता है और इतिहास तो वयस्क 'गम्भीर' लोगों से सरोकार रखता है। इसी तरह किसी गुलाम, किसान या मजदूर का जिक्र तब आता है जब वह स्पार्टकस या बिरसा मुण्डा या पावेल हो जाए। उनका जिक्र हो जाए तो उन्हें प्रस्तुत करने का नजरिया उनका अपना नहीं होता है। – उन्हें लेखक अपने ढंग से मूल्यांकन करके पेश करता है। इसलिए इतिहास में नारी या दलित का नजरिया नहीं होता है– यानी बहुमत का नजरिया नहीं होता है। ऐसे में यदि दलित इस इतिहास को नकारे तो अपना ही नहीं इतिहास का भी भला करेगा।" (पृ. 144)

इतिहास के इस नकार की प्रक्रिया ने कई ज्वलंत प्रश्नों को खड़ा किया। दलित कौन हैं.....दलित साहित्य का क्या अर्थ है.....दलित ही दलित की पीड़ा

Scanned by CamScanner